डॉ. बबीता सिंह

डॉ. सुरंगमा यादव

तारे

आसमान में टिमटिम तारे
सतरंगी है दिखते न्यारे
नीले-पीले हैं चमकीले
कितने सुंदर कितने प्यारे!

नाच दिखाते थिरक-थिरक कर
नभ में चलते मटक-मटक कर
कहो ना भाई गिन सकते हो
कोई तो गिनती करवाओ।

अम्मा की बिंदी-सा प्यारा
एक चाँद है लाखों तारा
मनमोहक-सी छटा बिखेरे
आँखमिचौली करते तारे।

युग-युग से अविराम है रुनझुन
देखो इन तारों का नर्तन
इठला-इठला छलक-छलक कर
झिलमिल-झिलमिल करते तारे।

ऐसा भी होता है जग में

नहीं बड़ाई कोई आयी, जाने क्यों उन हाथों में
कोई सार नज़र न आता, किसी को उसकी बातों में।
औरों को खुश करने में, हर बार कमी रह जाती है
सब कुछ करके भी वो, मीठे बोल न सुनने पाती है।
फूल बिछाए चुन-चुन कर, उन रस्तों पर सब चलते हैं
फूल वहीं पर उसके मन को,पल - पल घायल करते हैं।
सींच -सींचकर जिन पौधों को उसने वृक्ष बनाया है
फल की बेला में, बागवानी पर ही प्रश्न उठाया है।
अपने मन का रीता भाजन, दिखा नहीं वह पाती है
औरों का मन भरते- भरते अपना भूल ही जाती है।
दुनिया हँसते चेहरे का अनुमान नहीं कर पाती है
मन में उठते तूफानों का शोर नहीं सुन पाती है।
दफन हो गईं सब इच्छाएँ, मन के कब्रिस्तानों में
आँसू ही राहत देते हैं, तपते रेगिस्तान में।
अपनों ने जो अक्स दिखाया, अपने मन के दर्पण में
कैसी छवि बनी है उसकी, कभी न सोचा था मन में।
स्वर्णिम सपनों की किरचों पर, बैठी सोचे बारंबार
ऐसा भी होता है जग में? मन न माने क्यों एक बार।